YAKSHAGANA

Yakshagana is a unique and representative traditional performing art form of Karnataka State. In its evolution in the last six centuries, it has progressed much from its folk roots to a highly complex theatre form combining all the major art components discussed in Bharatha's Natya Shastra.

Yakshagana is a combination of dance and drama. It is a synthesis of four forms of Abhinaya namely Aharya, Angika, Vachika, and Sathvika. It's music, dance, costumes and dialogues are stylized. In its internal structure it has classical discipline and in its external expression it enjoys folk liberty. It is a whole night performance depicting the stories of the Ramayana, the Mahabharatha and the Puranas. Yakshagana is a kind of ritualistic Theatre art. It is moralistic in purpose and entertaining in performance. It is intellectually appealing and emotionally entertaining.

There are many variants of Yakshagana in different parts of Karnataka and in other states as well Yakshagana, which is the more popular name in the modern times is also known as Ata (Play), Dashavatara Ata (depicting the ten Avataras of Lord Vishnu), Bayalata (Play in the open field) etc. The variant seen in the region from Dakshina Kannada to Kasaragod is called Thenku thittu (southern style) and the variant seen from Udupi up to Uttara Kannada it is called Badaga thittu (northern style).

The term 'Yakshagana' has been interpreted variously and this aspect also throws light on the historicity of this theatre. Etymologically this name is a combination of two words 'Yaksha' and 'Gana'. Yaksha not only means a group of demigods in Indian mythology but also implies 'Worship' (Yaksha Poojaayam). 'Yakshaganam' is also seen in Andhra Pradesh (Kuchupudi Yakshaganam). In old Kannada and Telugu literary texts the words (Ekkala) and (Jakkala) stand for a kind of song, a group of people or community who sing in a particular style. Researchers opine that this style of singing might have led to the birth of 'Yakshagana'. After fifteenth Century we find a kind of composition of songs which are called 'Yakshagana Prabhandam' (Composition). These are song texts sung in temples during temple worship. What was once a form of singing gradually transformed to theatre.

There are no books that describe the features of Yakshagana theatre (as there are Lakshana Granthas to describe Indian Classical music or dance). There is a collection of a few Sanskrit verses and Kannada Songs called 'Sabhalakshana' which provide some basic theoretical information about the lead singer (Bhagavat), dimensions of performing area etc. It also contains invocatory songs to Lord Ganapathi, Lord Krishna, Subrahmanya etc.

The traditional performance of Yakshagana reveals its strong rustic folk features. Illiterate or less educated village artists performed Yakshagana, learning the art from senior artists. This is how all our folk arts have been handed down from generation to generation. In the last one hundred years there have been many changes. Many educated people in coastal Karnataka have became artists. Quite a few have studied Yakshagana with research interest. Many Theatre persons did experiments in Yakshagana with multi dimension growth a good model of Yakshagana has emerged with rigors and discipline of classical arts.

Department of Posts is pleased to issue commemorative postage stamp on Yakshagana and salutes the important role of this traditional dance form in preserving our rich heritage and culture.

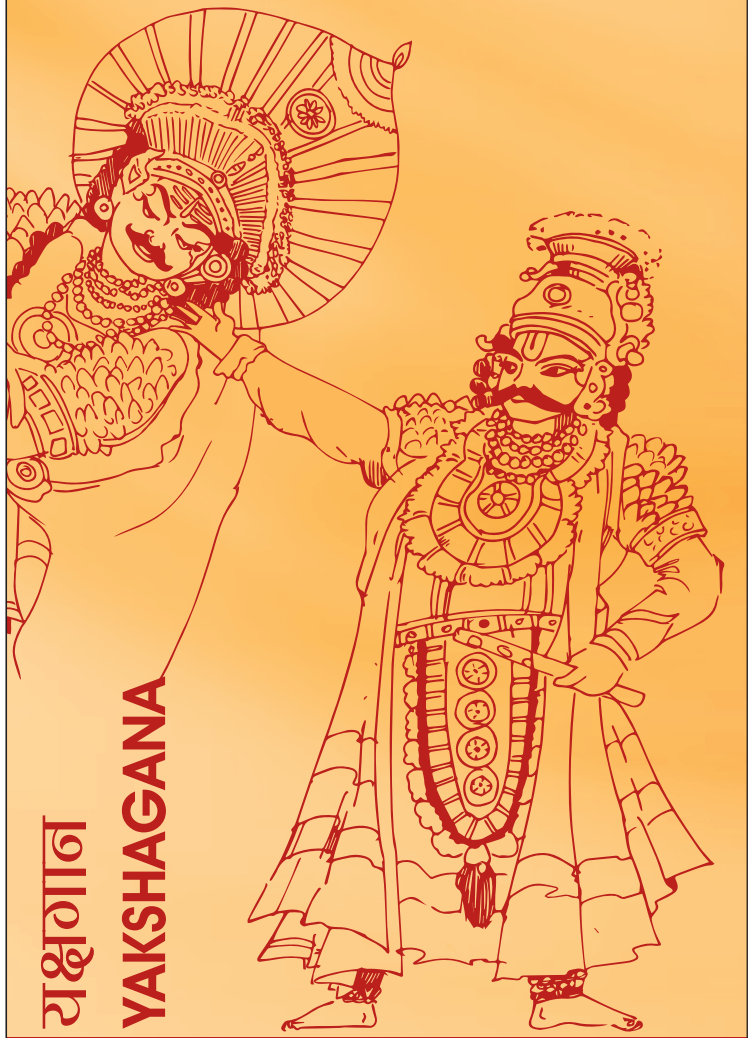
Credits:

Stamp/FDC/Brochure /Cancellation Cachet : Smt. Nenu Gupta

Text : Based on information provided by the proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts



यक्षगान
YAKSHAGANA

विवरणिका BROCHURE

यक्षगान

यक्षगान कर्नाटक राज्य की एक अनूठी और प्रमुख पारंपरिक नाट्यशैली है। लगभग 600 वर्ष के अपने इतिहास में यक्षगान ने लोककला से आगे बढ़ते हुए उच्च दर्जे के थियेटर का रूप ले लिया है, जिसमें भरत के नाट्यशास्त्र में वर्णित कला के सभी घटक देखने को मिलते हैं।

यक्षगान, नृत्य और नाट्यशैली का मिश्रण है, जिसमें अभिनय के चारों रूप अर्थात् आहार्य, आंगिक, वाचिक और सात्विक देखने को मिलते हैं। इस शैली में संगीत, नृत्य, पोशाक और डायलॉग विशिष्ट प्रकार के होते हैं। यक्षगान के मूल रूप में शास्त्रीय शैली है परन्तु इसकी बाह्य अभिव्यक्ति लोककला के रूप में प्रतिबिम्बित होती है। पूरी रात चलने वाले इस प्रदर्शन में रामायण, महाभारत और पुराणों की कथाओं का वर्णन किया जाता है। इस कला प्रदर्शन में नैतिक शिक्षा और मनोरंजन को विशेष महत्व दिया जाता है। बौद्धिक स्तर पर प्रभावित करने वाली यह कला भावनात्मक रूप से अत्यन्त मनोरंजक भी होती है।

कर्नाटक के साथ–साथ कई अन्य राज्यों के विभिन्न भागों में यक्षगान के विविध रूप देखने को मिलते हैं। वर्तमान में यक्षगान के नाम से लोकप्रिय इस नाट्यशैली को अटा (नाटक), दशावतार अटा (भगवान विष्णु के दस अवतारों को दर्शाता), बयालता (खुले मैदान में मंचन) आदि के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण कन्नड़ से कासरगोड़ के क्षेत्र में इसे थेन्कू थिट्टू (दक्षिणी शैली) और उडुपी से उत्तर कन्नड़ तक के क्षेत्र में इसे बडागा थिट्टू (उत्तर शैली) के नाम से जाना जाता है।

'यक्षगान' शब्द की व्याख्या अनेक प्रकार से की गई है, जो कि इस थियेटर कला की ऐतिहासिकता पर भी प्रकाश डालती है। यक्षगान, दो शब्दों 'यक्ष' और 'गान' से मिलकर बना है। भारतीय पुराणों में यक्ष का अर्थ मात्र अर्द्धदेव ही नहीं बल्कि 'पूजा' (यक्ष पूजायाम) भी है। 'यक्षगानम' आन्ध्र प्रदेश में भी देखने को मिलता है (कुचिपुड़ी यक्षगानम)। कन्नड़ और तेलुगु के प्राचीन साहित्य में (इक्कला) और (जक्कुला) शब्दों का अर्थ है–एक प्रकार का गीत, जिसे लोगों के समूह या समुदाय द्वारा विशेष शैली में गाया जाता है। शोधकर्त्ताओं का मत है कि गायन की इस शैली से 'यक्षगान' का उद्भव हुआ होगा। पंद्रहवीं शताब्दी के बाद से एक विशेष प्रकार की गीत रचना देखने को मिलती है, जिसे 'यक्षगान प्रबंधम' (रचना) कहा जाता है। ये वे गीत हैं, जिन्हें मंदिर में पूजा के दौरान गाया जाता है। पूर्व में गायन की यह कला, धीरे–धीरे थियेटर में परिवर्तित हो गई है।

ऐसी कोई पुस्तक नहीं है, जिसमें यक्षगान थियेटर की विशिष्टताओं को परिभाषित किया गया है (जैसेकि लक्षण ग्रंथ में भारतीय शास्त्रीय संगीत या नृत्य का वर्णन मिलता है)। संस्कृत के श्लोकों और कन्नड़ गीतों का संग्रह 'सभालक्षणा' मुख्य गायक (भागवत) के साथ–साथ प्रदर्शन स्थल के माप आदि के बारे में कुछेक सामान्य जानकारी प्रदान करता है। इसमें भगवान गणपति, भगवान कृष्ण, सुब्रहमण्यम आदि के स्तुति गीत भी शामिल होते हैं।

यक्षगान की इस पारंपरिक शैली में प्राचीन ग्रामीण लोककला की झलक देखने को मिलती है। इसकी प्रस्तुति अपेक्षाकृत कम शिक्षित ग्रामीण कलाकारों द्वारा की जाती है, जो अग्रणी कलाकारों से इस कला को सीखते हैं। हमारी सभी लोक कलाएं इसी तरह पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही हैं। विगत सौ वर्षों में इसमें कई बदलाव हुए हैं। तटीय कर्नाटक के अनेक शिक्षित लोगों ने भी इस कला को अपनाया है। कुछेक ने शोध के दृष्टिकोण से भी इसका अध्ययन किया है। कई थियेटर कलाकरों ने अनेक नए प्रयोग किए हैं। अभ्यास और अनुशासन के साथ हुए बहुआयामी विकास के फलस्वरूप यक्षगान एक बेहतरीन शास्त्रीय कला शैली के रूप में उभरा है।

डाक विभाग, हमारी समृद्ध विरासत और संस्कृति को बनाए रखने में इस पारंपरिक नृत्यशैली की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए यक्षगान विषय पर स्मारक डाक–टिकट जारी कर प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः–

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	302360
Stamps Printed	:	302360
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http:/www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार । डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5-00